E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(2): 276-277
Received: 07-02-2020
Accepted: 02-03-2020

डॉ0 अखिलेश कुमार मिश्र
अतिथि प्राध्यापक, मैथिली विभाग, के0पी0 कॉलेज, मुरलीगंज, मधेपुरा, भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 अखिलेश कुमार मिश्र
अतिथि प्राध्यापक, मैथिली विभाग, के0पी0 कॉलेज, मुरलीगंज, मधेपुरा, भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

मणिपद्मक नाट्य रचनाक समाज पर प्रभाव

डॉ0 अखिलेश कुमार मिश्र

प्रस्तावना –
साहित्य में नाट्य रचनाक विशेष महत्व अछि। अतएव डॉ0 व्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक दृश्य काव्यक माध्यम सँ समाज मे व्याप्त कुरीति भ्रष्टाचार सामाजिक असमानता आदि कें दृष्टिपथ पर राखि नाट्य रचनाक श्रीगणेश कयलनि जे स्वाभाविक रूप सँ सामाजिक चेतनाक जागृति में सहायक भेल अछि। सामाजिक आन्दोलद मे अंग्रेजीया सरकारक योगदान रहल अछि। अंग्रेजी सराकार सें पूर्व प्रायः सामाजिक ढाँचा स्थिर आ परिवर्तनशील छल। संयुक्त परिवार जाति व्यवस्था सामाजिक जीवनक आधार छल। समाज मे जातीय व्यवस्था आ मर्यादाक महत्व छल। ब्राह्मण सामाजिक जीवनक शीर्ष स्थान पर रहैत छलाह। वर्षोवरिषक पराधीनता समाजिक जीवन के अनेक प्रकारक कुरीति आनि देने छल यथा – सती प्रथा, बाल विवाह, कन्यावध, छुआछूत इत्यादि विषमता एवं घृणा सामाजिक जीवन कें धुन जकाँ शनैः शनैः चाटैत छल एवं गतिहीन सामाजिक जीवनक कुरीति कें समाप्त करबाक महत्वपूर्ण दायित्व साहित्यकार पर से हो होइत छनि फलस्वरूप सामाजिक जीवन मे परिवर्तन होयव अनुभव महसुस होभय लागलनि।
मात्र एहि ठाम हम नाटकक उत्तपतिक कतेक आधार मानल गेल अछि तकर सूक्ष्म विषय प्रस्तुत करवाक प्रयास कएल अछि।
'मैथिली नाटकक उद्भव ओ विकास' मे यथा –

1. ऋगवेद संवाद सूक्त सँ नाटकक उत्पति
2. नाच सँ नाटकक उत्पत्ति
3. कठपुतली नाच सँ नाटकक उत्पत्ति
4. छाया नाटक सँ तारक नाटकक उत्पत्ति
5. मृतक वीरक पूजा सँ नाटकक उत्पत्ति
6. विष्णु कृष्ण सम्प्रदाय सँ नाटकक उत्पत्ति
7. इन्द्रध्वजोत्सव सें नाटकक उत्पत्ति
8. ग्रीक नाटक सँ भारत मे नाटकक उत्पत्ति[1]

वस्तुतः नाटकक उत्पत्ति नैसर्गिक थिक। कालक्रमे मनुष्य केऽ एकर सहजता आ महत्ता आवि जाइत अछि। अर्थात् बच्चा गर्भगृह सँ जखनहि वाहर होइत अछि हुनका मे कानव, हँसव कल्लोल यूक्त किलकारी ललिचगर वस्तु कें देखि हाथ–पैर फेकव, दोसरक अनुश्रवण करब आदि सहजहि भए जाइत अछि। क्रमशः दृश्य काव्य मे चेतनाक इएह अनुभूति होइत अछि। कारण चेतना नव संचार यूक्त जागरण थिक। घृणाक प्रतिकार थिक, दृढ़ताक द्योतक थिक सफलता एकर परिणाम थिक। नाटककार श्री मणिपद्म सामाजिक वातावरण मे व्याप्त विषमता पदलोलुपता, दरबारीपन, सरकारी राशिक लूट, लहुलुहान सामाजिक जीवन पर आधारित नाटक वा एकांकी हिनक साहित्यिक जीवनक सार्थक सफलता थिक।
मणिपद्मक दृश्य काव्य मे सामाजिक चेतनाक सचित्र चित्रण थिक 'झुमकी' नाटक। झुमकी नाटक नवम्बर 1977 ई0 मे मैथिली अकादमी पटना सँ प्रकाशित भेल अछि। सोहनी गाम आ गामक पुस्तेनी स्वभाव गुण जाहि सँ अगल–वगलक गाम डेराइत छल। सभटा पुस्तेनी डकैत। झुमकी नाटकक भूमिका सँ ई पूर्णरूपेण स्पष्ट होइत अछि। ''युग–युग सँ अपराधी जातिक टोल 'सोहनी' ग्राम। ग्रामवासी पुस्तैनी क्रिमनल ककरो एक्को वीत भूमि नहि। झुमकी एही टोलीक प्रोडक्ट थिक। ग्रामक ताड़ीखानाक साकीवालाक रूप मे एकर जीवन प्रारंभ भेलैक। बाद मे ई इन्टरस्टेट गैंगक संचालिका बनल। एहि दुर्दान्त डकैतनीक मूड़ी पर पच्चीस हजारक इनाम छलैक। छल ई आतंकक प्रति मूति।[1] इन्टरस्टेट गैंगक सक्रिय मुखिया 'झुमकी' सामाजिक अवसाद युक्त जीवन यापन सँ तंग भए गेल छथि। ई सामाजिक चित्र थिक युक्त जीवन यापन सँ तंग भए गेल छथि।

ई सामाजिक चित्र थिक तकरा नाटककार मणिपद्म मनोवैज्ञानिक ढ़ंग सँ सामाजिक चेतनाक स्वरूप प्रदान कएल अछि। भूमिका मे डॉ0 रमानाथ झा लिखलनि अछि – किन्तु जे परिस्थिति झुमकी कें सामान्य नारी सँ दुर्दान्त डकैतनी वनऽ लेल विवश कयल ओऐह परिवर्तित परिस्थिति ओकर शोधर्थाकारी वीस सूत्री कार्यक्रमक अग्रणी बना देलकैक।[2]

कंठहार 1964 ई0 मे लिखल कंठहार नाटक मणिपद्मक ऐतिहासिक दृश्य काव्यक रूप मे कृति थिक। कंठहार विद्यापाति पर आधारित नाटक थिक परन्तु नाटकीय परिदृश्यक महत्व न्यून होयवाक कारणें एकरा ओतेक महत्व नहि भेटल छल चूँकि एहि नाटक मे मातृभुमि भक्ति तथा क्षेत्रीयताक वेसि समावेश भऽ गेल छल। कंठहार नाटक मे कथाक विशालताक कारणें ई पैघ भऽ गेल छल। कोनो नाटक मे पैघ वाक्य रहने सरसता मे नीरसता आनि दैछ, जाहि कारण नाटकक रसक महत्व समाप्त भऽ जाइत अछि।

रचनाकारक सामाजिक भावना दृश्य काव्यक समस्त रचना मे प्रस्तुत भेल अछि। वैद्विकताक पुरान स्वरूप आ ज्ञानवर्द्धनक अति आधुनिकताक प्रभाव रचना पर पड़ल अछि। चुकि प्राचीन समयक शिक्षा – दीक्षा, परम्परा संस्कृति आ आजुक भागदौड़ युक्त जीवन शैली मे नाटककार अपन रचनाक माध्यम सँ अभिव्यंजित कयलनि अछि। हिनक वस कण्डक्टर शीर्षक एकांकी कें देखल जा सकैत अछि। वेरोजगारी कोना संस्कार बदलि दैछ संगहि रोजगारक लेल विज्ञापनक एकटा स्वरूप कोना सामाजिक स्वभाव कें प्रभावित करैछ देखल जा सकैछ। तरूण स्वागत बजैछ "एह हद भऽ गेल सार सभ पहिने विज्ञापन देत। तखन नाटक करत इंटरव्यूक, फेर बहाल करत अपन सारक सारक सारकें। जँ से नहि तें प्रति बहाली ई हजार टाका माँगत। (कने ठमकि के) ई शिक्षा फूसि, फूसी ई सरकार समाज आ गरीबी हटाओंक नारा। नीक डिवीजन सँ पास कयलहुँ ताहि सँ कि? प्रभा आ प्रतिभा अछि ठेकर खाइले आ अपमान पीवऽ ले (हाथक कागत तामसे डोलवैत अछि) चली आई दस लोकक आगू मे चौवट्टी पर दशा करी एहि कागतक जे लोको एकर व्यर्थता बूझय। (कागज उठा कऽ क्षुब्ध स्वरे)

"फाड़ि देल जाय कि डाहि देल जाय
कहू एहि कागतक की कयल जाय
कट्ठा विगहा वेचि-वेचि करा सिरजलहुँ
गेस पेपर पढ़ि-पढ़ि एकरा अरजलहुँ
एकरा लेने सगरे दुतकारे टा सुनलहुँ
एकरा भरम मे कतऽ ने मरमलहुँ
फाँसी लगा मरी की डुबि मरल जाय
कहु अपना संग की सलूक कायल जाय।[1]

आधुनिक पढ़ाई आ डिग्रीक वेहाल हाल पर चिन्ता व्यक्त कएल अछि। राजनीति कएनिहार भ्रस्टाचार आ भाइ-भतिजावादक नमूना प्रस्तुत कएलनि अछि। प्रजातंत्र मे गिरावट पर चिन्ता व्यक्त करैत नाटककार लिखैत छथि – "सभटा फूसि। सभटा ठोंग। ई डेमोक्रेसी अपनहि मे एकरा विराट छलना अछि। ई शिक्षा पद्धति एकटा मायाजाल भेल आ ई सरकार एकरा मृगमरीचिका थिक। वाह रे नारा पर लूटि जायवाला समाज। वाह रे सभ्यता संस्कृतिक नाम पर पसरल ठक संगठन आ सरकारक नाम पर नरभक्षी सभक जुटानि। कतऽ जाउ? जेम्हरो डेग बढवैत छी तही ठाँ अपमानित, लांछित आ भूलूंठित कायल जायत छी। आखिर हमर अपराध? (कने ठमकि आकाश दिश तकैत) हँ, हँ अछि हमर अपराध बड़का अपराध अछि। साँचे छुट्टी भेल अछि। हम क्रिमिनल नहि भऽ सकलहुँ। जे जतेटा क्रिमिनल अछि, समाज शत्रु अछि से तेहने उच्चासन पर विराजमान अछि आ आ चारू भर सँ अपन जय जयकार सुनि रहल अछि।

वस्तुतः समाज मे वैचारिक विषकमताक परिणाम जे आक्रोश छलनि तकर चित्रण सजगताक संग अपन एकांकी वस कन्डक्टर मे कएल अछि। सैकड़ो नौजवान रोजी रोटीक लेल रोजगारक खोज मे वौआइत अछि आ नौकरी चाकरीक दशा आ दुर्दशाक स्थिति केहन से देखोलनि अछि परन्तु आव चुपचाप रहब सम्भव नहि। अतः वस कन्टक्टर एकांकी सामाजिक विशेलषणक सचित्र चित्रण थिक।

तेसर कनियों 1986 ई0 मे कर्णगोष्ठी कलकत्ता सँ प्रकाशित नाटक थिक। सती प्रथाक वास्तविकता मे कतेक दम अछि हमरा नहि बुझल अछि परन्तु पतिक मृत्यु पश्चात पत्नी कें धधकल चिता पर ठाड़ कए देने सँ सतीत्व कें प्राप्त करैत छलीह एहि मे पत्नीक दोष कतए? नीरेन नाम यूवकक विवाह क्रमशः तीनटा होइत अछि। पहिल दू टा कन्या दहेजक बलिवेदी पर चढ़ादेल गेल अछि। तेसर कनियांक बाप सँ दहेजक जिज्ञासा रखैत अछि। पहिल बहुक बकलावाली (चम्पावती) कएलनि अठासी हजार टाका दहेज लए कए दोसर बहु 'मकुनियावाली' अयलीह। मकुनियावाली कें से हो छोलनी धिपाकऽ गतर-गतर दगैत अछि। अंत मे जहर पीवि लैत छलीह पुनः तेसर कनियाँ सँ विवाह होइत छनि परन्तु तेसर कनियाँ अखिल भारतीय सुरक्षा परिषदक जेनरल सक्रेटरी छलीह। सभटा दहेज आ छट्ठीक दूध बोकरा दैत छथिन आ अंत मे जहल मे वंद करा दैत छथिन। एकर पात्र सभ अछि – मधुरी (नीरेनक गामक नवयुवती) छवि – (मधुरिक सखी) पुरोहित – सती करौनिहार युवक (सती सभ कें आगि देनिहार) राजाराम मोहन राय – सती प्रथाक मुखर नेता नरेन (बहु खोकर तरूण नव युवक) मधुमती (अखिल भारतीय सुरक्षा परिषदक जेनरल सक्रेटरी) घुटरी – नारी सुरक्षा वैडक मेजर चपना, बृद्ध, बूढ़ी, प्रोढ़ा षोढ़सी वकुलावाली एवं मकुनावाली। एकांकी सात दृश्य मे विभाजीत अछि।

वस्तुतः डॉ0 व्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक सम्पूर्ण एकांकी देश-दशा काल परिस्थिति, परिवेश आदि कें ध्यान में राखि लिखल गेल अछि। हिनक सम्पूर्ण एकांकी दृश्य काव्य कें जँ एक दिस परौणाकि सांस्कृति स्वाद अछि तें दोसर दिस आधुनिकताक चका-चौंध जीवन यापन प्रणालीक समावेश देखओल नोल अछि।

संन्दर्भ :-

1. मैथिली नाटकक उद्‌भव ओविकास – डॉ0 लेखनाथ मिश्र, पृ0- 17-23।
2. झुमकीक भुमिका पृ0सं0 – ज-झ
3. झुमकीक भुमिका पृ0 – स
4. झुमकी प्रकाश्कीय वक्तव्य – श्रीकान्त ठाकुर
5. मण्धिपदम् तेसर कनिया – पृ0 सं0 – 9
6. डॉ0 दुर्गानाथ झा श्रीस – मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ0सं0 – 301